بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in

17.03.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।

जमाअत के दोस्तों को पाकिस्तान, बर्कीना फ़ासो तथा बंगला देश के अहमदियों के लिए दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 17 मार्च 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले कई सप्ताह से क़ुर्आन करीम के स्तर, श्रेष्टता एवं महत्त्व बयान हो रहे हैं। क़ुर्आन शरीफ़ के अनुसार धर्म का महत्त्व क्या है तथा मानव शक्तियों पर इसका प्रभाव क्या है तथा होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इंजील ने इसका कोई जवाब नहीं दिया, क्यूँकि इंजील विवेक पूर्ण रीति से दूर है किन्तु क़ुर्आन शरीफ़ विस्तार पूर्वक बार बार इस सवाल का उत्तर देता है कि धर्म का यह अधिकार नहीं कि मनुष्य की प्राकृतिक शक्तियों को बदले तथा भेड़िये को बकरी बना कर दिखलाए अर्थात शक्ति शाली को दुर्बल बना कर दिखाए, बल्कि धर्म का मूल कार्य यह है कि जो शक्तियाँ तथा गुण प्राकृतिक रूप से मनुष्य में उपलब्ध हैं, जो प्रतिभाएँ एवं गुण हैं उनको अपने स्थान तथा अवसर पर लगाने के लिए मार्ग दर्शन करे। धर्म का यह अधिकार नहीं है कि किसी प्राकृतिक शक्ति को बदल डाले बल्कि यह अधिकार है कि उसको अपने उचित स्थान पर उपयोग में लाने के लिए हिदायत करे। केवल एक शक्ति पर ज़ोर न डाले बल्कि समस्त शक्तियों को उपयोग में लाने के लिए उपदेश दे। मूल उद्देश्य सुधार एवं अच्छाई है तथा यह लक्ष्य जैसे भी पूरा हो उसका प्रयास करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह बात वास्तव में सत्य है कि मुसलमान क़ुर्आन को बिल्कुल नहीं समझते किन्तु अब ख़ुदा का इरादा है कि वास्तविक अर्थ क़ुर्आन करीम का प्रकट करे। ख़ुदा ने मुझे इसी लिए नियुक्त किया है तथा मैं उसके इलहाम तथा वह्यी के माध्यम से क़ुर्आन को समझता हूँ। क़ुर्आन करोम की ऐसी शिक्षा है कि इस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती तथा ऐसा बुद्धिसंगत है कि एक दार्शनिक को भी आपत्ति करने का अवसर नहीं मिलता। फिर क़ुर्आन की

महानता बयान फ़रमाते हुए आप अलै. जमाअत को उपदेश देते हैं- क़ुर्आन शरीफ़ पर चिंतन करो, उसमें नेकियों तथा बुराईयों का विवरण है तथा भविष्य वाणियाँ हैं। यह वह धर्म पेश करता है जिस पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती क्यूँकि उसकी बरकतें तथा फल निरन्तर ताज़ा मिलते रहते हैं। यह गर्व क़ुर्आन मजीद को ही है कि अल्लाह तआला ने हर एक रोग का निवारण इसमें बताया, समस्त शक्तियों की दीक्षा फ़रमाई और जो बदी के विषय में बताया है उसके दूर करने का तरीक़ा भी बताया है इस लिए क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते रहो, दुआ करते रहो तथा अपने चाल चलन को उसकी शिक्षा के आधीन रखने का प्रयास करो। क़ुर्आन करीम पर चिंतन करने की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि रस्म तथा प्रथा से बचना अच्छा है, इससे धीरे धीरे शरीअत में बिगाड़ शुरु हो जाता है। उत्तम रीति यह है कि ऐसे जाप करने में जो समय उसने लगाना है वही क़ुर्आन शरीफ़ पर चिंतन करने में लगावे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि नए नए तरीक़ों से हमें बचना चाहिए तथा क़ुर्आन शरीफ़ का अनुवाद एवं व्याख्या पढ़ने की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। अगले सप्ताह रमज़ान भी शुरु हो रहा है, तो इस रमज़ान में विशेष रूप से हमें क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने, पढ़ाने तथा समझने की कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि दिल की कठोरता को कोमल करने के लिए यही तरीक़ा है कि क़ुर्आन शरीफ़ को ही बार बार पढ़े। जहाँ जहाँ दुआ होती है वहाँ मोमिन का भी दिल चाहता है कि यही अल्लाह की रहमत की कृपा मुझ पर भी हो। क़ुर्आन करीम का उदाहरण एक बाग़ की भांति है कि एक स्थान से फूल चुनता है, फिर आगे चल कर किसी अन्य प्रकार का फूल चुनता है अतः चाहिए कि हर स्थान का उचित अवस्था में लाभ उठावे। इससे रूहानी उन्नति होती है कि मनुष्य उसके आदेशों को अपने ऊपर लागू करे तथा अवैध कामा से बचने की कोशिश करे। जो निर्देश अल्लाह तआला ने दिए हैं, वे करे तथा जिनसे रोका है उनसे रुकने की कोशिश करे, यही फूल हैं जो इंसान उस बाग़ से चुनता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- सहाबा किराम रज़ी. हदीसों को क़ुर्आन शरीफ़ से कम स्तर पर मानते थे। फ़रमाया- यह भी याद रखें कि हदीसे यद्यपि बाद में जमा की गई हैं किन्तु कई बार कुछ सहाबी लिख भी लिया करते थे। एक बार हज़रत उमर रज़ी. किसी मामले पर निर्णय करने लगे तो एक बूढ़ी स्त्री ने कहा कि हदीस में यह लिखा है। परन्तु आप रज़ी. ने फ़रमाया कि मैं एक बुढ़िया के लिए किताबुल्लाह को नहीं छोड़ सकता। अतएव वास्तविकता यही है, इसी को हमें धारण करना चाहिए। यदि यह नहीं होगा तो नई नई बातें दीन में फैलती चली जाएंगी तथा इसी कारण से मुसलमानों में नए नए बिगाड़ फैलते जा रहे हैं तथा क़ुर्आन करीम की मूल शिक्षा से दूर कर रहे हैं। साधारण मुसलमाना की अधिकांश संख्या तो अशिक्षित है। तथाकथित विद्वान उनको जिस ओर ले जाते हैं, चल पड़ते हैं तथा नई नई बातें फैलती जाती हैं किन्तु इसके बावजूद हम पर आरोप है कि हम क़ुर्आन शरीफ़ के अर्थों में बदलाव करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तक मुसलमान क़ुर्आन शरीफ़ के पूर्णतः अनुकरण करने वाले तथा पाबन्दी करने वाले नहीं होते, वे किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकते। आप अलै. फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन हीरे पन्नों की थैली है तथा लोग इससे परिचित नहीं हैं। खेद है कि लोग जोश तथा उत्सुकता के साथ क़ुर्आन शरीफ़ की ओर ध्यान नहीं करते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ प्रमाणिक रंग रखता है। कोई बात ऐसी बयान नहीं करता जिसके साथ उसने शक्ति शाली एवं तर्क युक्त प्रमाण न दिया हो। जैसे क़ुर्आन शरीफ़ की साहित्यिक सुगम एवं सरल भाषा अपने अन्दर एक आकर्षण रखती है, जिस प्रकार से उसकी शिक्षा में बुद्धिपूर्णता एवं आकर्षण है, वैसे ही उसके तर्क प्रभाव पूर्ण हैं। अतएव कोई अन्य किताब क़ुर्आन का मुक़ाबला नहीं कर सकती। जब क़ुर्आन पढ़ो तथा कोई बात क़ुर्आन करीम में देखो तो वहीं उसका प्रमाण भी तलाश करो। आप अल. फ़रमाते हैं- याद रखना चाहिए कि हम तो क़ुर्आन शरीफ़ पेश करते हैं जिससे जादू भागता है, इसके मुक़ाबले पर कोई जादू तथा झूठ नहीं ठहर सकता। क़ुर्आन करीम वह महान हथियार है जिसके सामने किसी झूठ को जमे रहने का साहस नहीं हो सकता। यह आसमानी हथियार है जो कभी मंद नहीं हो सकता अतः हमें क़ुर्आन शरीफ़ पर चिंतन एवं मनन करने की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि हम अपनी रूहानी तथा विवेक की दशा को उत्तम करें तथा विरोधियों का खंडन भी कर सकें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ सम्मान योग्य किताब है जिसने क़ौमों में सन्धि की आधार शिला रखी तथा हर एक क़ौम के नबी को मान लिया। पूरे विश्व में यह विशेष गर्व केवल क़ुर्आन शरीफ़ को प्राप्त है जिसने यह शिक्षा दी कि- لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ अर्थात मुसलमानो यह कहो कि हम दुनिया के समस्त नबियों पर ईमान लाते हैं तथा उनमें भेदभाव नहीं करते कि कुछ को मानें तथा कुछ को रद्द करें। आप अलै. ने चैलेन्ज फ़रमाया कि यदि ऐसी सन्धि कराने वाली कोई अन्य किताब है तो उसका नाम लो। आप अलै. ने फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ एक ऐसी किताब है जिसका अनुसरण करने से इसी दुनिया में मुक्ति के संकेत प्रकट हो जाते हैं। इसका बयान ऐसा समृद्ध सूक्ष्म और सत्य है कि जितने भी ऐसे सन्देश एवं शंकाएँ इस दुनिया में पाई जाती हैं कि जो ख़ुदा तक पहुंचने से रोकते हैं उन सबका रद्द उचित रूप से इसमें उपलब्ध है। क़ुर्आन करीम निर्णायक एवं विश्वस्त कलाम है जो शंकाओं तथा कुधारणाओं से मुक्त है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने पहले विभिन्न रूप में हर एक उम्मत को अलग अलग कायं-पद्यति भेजी और फिर चाहा कि जैसे कि ख़ुदा एक है, वे भी एक हो जाएँ। तब सबको एकत्र करने के लिए क़ुर्आन को भेजा। क़ुर्आन शरीफ़ ने पहली किताबों तथा नबियों पर उपकार किया कि उनकी शिक्षाओं को जो कथाओं के रंग में थीं, इलमी रंग दे दिया। कोई व्यक्ति इन कथाओं से मुक्ति नहीं पा सकता जब तक वह क़ुर्आन शरीफ़ को न पढ़े। जो लोग क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ते तथा उसको एक कथा समझते हैं उन्होंने इसका अपमान किया है। हमारे विरोधी हमारे विरोध में इस कारण से तेज़ हैं कि हम दुनिया को दिखाना चाहता हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ पूर्णतः नूर, विवेक शील तथा ब्रह्मज्ञान है। ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा से हम पर खोल दिया है कि क़ुर्आन शरीफ़ एक जीवित एवं रौशन किताब है। इस लिए हम उनके विरोध की चिंता क्यूँ करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में ऐसे महामान्य ज्ञान के भंडार हैं जो तौरात तथा इंजील में खोज पाना बेकार है। अतः इसके अर्थों तथा भावार्थों पर विचार करने की हर

एक को आदत डालनी चाहिए ताकि ख़ुदा तअला के कलाम की सुन्दरता का हमें पता चले। आप अलै. फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में आरम्भ से अन्त तक आदेशों तथा निषेध कार्यों का विवरण मौजूद है। तिलावत करते हुए उन्हें तलाश करना चाहिए तथा उनको अपने जीवन का अंश बनाना चाहिए तभी हम ख़ुदा तआला के कलाम से वास्तविक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ में सब कुछ है किन्तु जब तक दिव्य दृष्टि न हो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ ईश्वरीय ज्ञान का भंडार है। दुनिया की बरकतें भी उसी के साथ आती हैं। अल्लाह तआला ने इसी लिए नबियों को भेजा तथा अपनी अन्तिम किताब नाज़िल फ़रमाई कि दुनिया उसके प्रभाव से परिचित होकर बच जावे। अतः हर अहमदी का यह भी काम है कि जहाँ वह क़ुर्आन करीम की शिक्षा के अनुसार अपनी अवस्था को ढालने का प्रयास करे, वहाँ दुनिया को भी उस शिक्षा से अवगत करे तथा आध्यात्मिक एवं भौतिक विनाश से उन्हें बचाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं तथा क़ुर्आन शरीफ़ ख़ातमुल कुतुब है। जो आँहज़रत स. ने करके दिखाया तथा जो कुछ क़ुर्आन शरीफ़ ने शिक्षा दी उसको छोड़ कर मुक्ति नहीं मिल सकती, यह हमारा धर्म एवं आस्था है। काश यह बात मुस्लिम जनता को भी समझ आ जाए तथा वे ज़माने के इमाम को पहचानने वाले बनें।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने पाकिस्तान, बर्कीना फ़ासो तथा बंगला देश के अहमदियों के लिए दुआ की पुनः तहरीक फ़रमाई। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान के अहमदियों के लिए तथा देश की सामान्य अवस्था के लिए दुआ करें। बर्कीना फ़ासो में अहमदियों के लिए तथा देश के अन्य हालात के लिए दुआ करें, बंगला देश के अहमदियों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको भी सुरक्षित रखे, वहाँ फिर आज मौलवियों ने कुछ शोर शराबा (उपद्रव) करना था। दुनिया के हर देश में जहाँ जहाँ अहमदी हैं उनके लिए दुआ करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने रमज़ान के हवाले से दुआओं की ओर विशेष ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया- रमज़ान भी अब शुरु हो रहा है, जैसा कि मैंने कहा था इसमें जहाँ विशेषतः क़ुर्आन करीम को पढ़ने तथा समझने की ओर ध्यान दें वहाँ दुआओं की ओर विशेष ध्यान दें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए और रमज़ान के फ़ैज़ से लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131